महावीरी सरस्वती विद्या मंदिर के नवनिर्मित भवन के उद्घाटन समारोह में महामहिम राज्यपाल श्री राम नाथ कोविन्द का सम्बोधन

(दिनांक–28.02.2017, समय–पूर्वाह्न 11:30 बजे, स्थान–बरहन गोपाल, सिवान)

महावीरी सरस्वती विद्या मंदिर, बरहन गोपाल के नव–निर्मित भवन के उद्घाटन समारोह में प्रमुख रूप से उपस्थित सांसद श्री ओमप्रकाश यादव जी, पूर्व मंत्री एवं सीवान के विधायक श्री व्यासदेव प्रसाद जी, जय प्रकाश विश्वविद्यालय, छपरा के कुलपति श्री हरिकेश सिंह जी, लोक शिक्षा समिति के प्रदेश सचिव श्री दिलीप कुमार झा जी, प्रधानाचार्य श्री आशुतोष मिश्र जी, कार्यक्रम में उपस्थित गणमान्यजन, मीडिया–प्रतिनिधिगण, विद्यालय के शिक्षकगण एवं प्यारे विद्यार्थियों !!

आज आपके विद्यालय को एक नया भव्य भवन मिला है, जो प्रकृति के खुले प्रांगण में स्थापित है। शहर के भी नजदीक, और साथ ही ग्रामीण क्षेत्र की पर्यावरणीय शुद्धता और शांतिपूर्ण वातावरण से भी परिपूर्ण –आपका यह विद्यालय निश्चय ही विद्या–अध्ययन का एक प्रमुख केन्द्र सिद्ध होगा और इससे क्षेत्र में शिक्षा का सम्यक् रूप से विकास संभव हो पाएगा –ऐसा मुझे विश्वास है।

आपके विद्यालय का नाम रखा गया है –'महावीरी सरस्वती विद्या मंदिर'। प्यारे बच्चों! आपकी इस शिक्षण–संस्था के नामकरण में ही आपकी संस्था के उद्देश्य अन्तर्निहित हैं। महावीर हनुमान और माँ सरस्वती –इन दोनों का नाम आपकी संस्था से जुड़ा हुआ है। महावीर हनुमान भारतीय संस्कृति में शक्ति और ज्ञान–दोनों के अग्रणी देवता माने गये हैं। वे 'अतुलित बलधामम्' हैं, तो साथ ही 'ज्ञानीनाम् अग्रगण्यम्' भी हैं। अर्थात् शक्ति और शास्त्र –दोनों के निधान पवनपुत्र हनुमान की कृपा आपकी संस्था पर है। और फिर, माँ सरस्वती का भी वरदान आपको प्राप्त है। निश्चय ही, बल और बुद्धि दोनों का विकास आज की शिक्षा का लक्ष्य होना

चाहिए। एक शक्तिशाली और सुशिक्षित देश ही विश्व का सिरमौर हो सकता है।

प्यारे विद्यार्थियों! आज भारत की 70 प्रतिशत आबादी युवाओं की है। आप बच्चे ही कल के युवा भारत के सपनों को साकार करोगे। भारत के वास्तविक भाग्य–विधाता आप ही हो। आज आप में जो बीज बोये जायेंगे, जैसे संस्कार भरे जाएँगे, उन्हीं के अनुरूप कल का हमारा भारतवर्ष बनेगा।

प्यारे बच्चों! शिक्षा का उद्देश्य सिर्फ डिग्री लेकर अच्छा रोजगार प्राप्त करना मात्र नहीं है। मनुष्य को शिक्षा से संस्कार की प्राप्ति होती है, संस्कृति का बोध होता है और अपने राष्ट्र के प्रति मन में आस्था जगती है। महान संत स्वामी विवेकानन्द का कथन है कि–''जो शिक्षा मनुष्य को जीवन–संग्राम में उतरने में समर्थ नहीं बना सकती, मनुष्य में चरित्र–बल, परहित भावना तथा सिंह के समान साहस का भाव नहीं जगा सकती, उसका कोई महत्व नहीं है। वस्तुतः हमें ऐसी शिक्षा की आवश्यकता है, जिससे चरित्र–निर्माण हो, मानसिक शक्ति बढ़े, बुद्धि विकसित हो और देश के युवक अपने पैरों पर खड़ा होना सीखें।'' स्वामी जी शिक्षक के लिए आदर्श गुणों का उल्लेख करते हुए कहते हैं कि–''वे ही सच्चे गुरू हैं, जो अपने शिष्य की प्रवृत्ति के अनुसार, उसके अन्तर्निहित गुणों के विकास का प्रयास करते हैं।'' अर्थात् सच्चा गुरू वही है, जो विद्यार्थी को सिखाने के लिए विद्यार्थी की ही मनोभूमि में उतर आए और अपनी आत्मा अपने शिष्य की आत्मा के साथ एकरूप कर, उसे सम्यक् ज्ञान प्रदान करे।

सामान्यतः शिक्षा को कक्षा में प्राप्त पुस्तकीय ज्ञान तक सीमित कर देखा जाता है, लेकिन विभिन्न विषयों की पढ़ाई करते हुए डिग्री हासिल कर कोई रोजगार प्राप्त कर लेना ही, शिक्षा का एकमात्र उद्देश्य नहीं है। शिक्षा का परम उद्देश्य कहीं इससे अधिक काफी गुरूत्तर और महान है। गाँधीजी शिक्षा को धर्म और नैतिकता

से पृथक् नहीं मानते। उनका स्पष्ट रूप से कहना है कि ''किसी भी समाज की शिक्षा उसके धर्म की शिक्षा के बिना निकम्मी है। धार्मिक–वृत्ति छात्रों को अपने माता–पिता, गुरूजन और समाज के श्रेष्ठजन के प्रति श्रद्धा के भाव रखने की प्रेरणा देती है। गाँधीजी धर्म को भी व्यापक परिप्रेक्ष्य में देखते हैं। वे मानवता को सबसे बड़ा धर्म मानते हैं और नैतिकता को मनुष्य को दी जाने वाली शिक्षा का अविभाज्य अंग मानते हैं। गाँधीजी स्वतंत्रता, समानता, न्याय आदि को व्यक्ति के समग्र विकास के लिए अत्यन्त आवश्यक मानते हैं। उन्होंने एक बार विद्यार्थियों को संबोधित करते हुए कहा था कि–''जिस विद्या को ग्रहण करने से हमारी स्वतंत्रता हमसे दूर जाती दिखाई दे, उस विद्या का त्याग करना चाहिए। युवा–पीढ़ी यदि शौर्यहीन बन जाएगी, तो विद्या प्राप्त करके भी यह क्या कर लेगी? अतः विद्या–प्राप्ति भी मानवता और नैतिकता की रक्षा से जुड़ी होनी चाहिए।''

प्यारे बच्चों! रामायण, महाभारत, वेद–पुराण, कुरान, बाईबिल आदि सारे धार्मिक–ग्रन्थ, हमें सदाचार और मानवता के पथ पर चलने की ही प्रेरणा देते हैं। आधुनिक भारत का महान ग्रन्थ ''भारतीय संविधान'' भारतीय संस्कृति और जीवन का सर्वश्रेष्ठ मर्यादा–ग्रन्थ है। हमें इसकी 'प्रस्तावना' को अपने जीवन में हृदयंगम कर लेना चाहिए। इस 'प्रस्तावना' में ही समानता, स्वतंत्रता, शांति, न्याय एवं धर्म–निरपेक्षता आदि जिन बातों का उल्लेख है, वे हमारे जीवन के नियमन के लिए बेहद जरूरी हैं। संविधान की 'प्रस्तावना' का शैक्षिक पाठ्यक्रमों में शामिल होना जरूरी है, जिस पर विद्यालयों में समय–समय पर परिचर्चा हो, ताकि सभी भारतवासी संविधान में समाहित आदर्शों को आत्मसात कर सकें।

आधुनिक युग ज्ञान–विज्ञान और तकनीकी विकास का युग है। 'सूचना क्रांति' और 'तकनीकी विकास' के आज के युग में आप वैज्ञानिक विकासपरक गतिविधियों से पृथक् रहकर, समुचित

रूप से लाभान्वित नहीं हो सकते। किन्तु, साथ ही मेरा सुझाव होगा कि आप वैज्ञानिक और भौतिक विकास के इस दौर में भी अपने राष्ट्र की आध्यात्मिक और सांस्कृतिक ज्ञान–सम्पदा का भी पूरा ख्याल रखें। हम इसी सम्पदा के बल पर विश्व–गुरू थे और आगे भी हमारा यही वैभव पूरी दुनियाँ का हमें सरताज बनाएगा।

प्यारे बच्चों, आप उस जिले के सपूत हो, जिसकी मिट्टी में देशरत्न डॉ॰ राजेन्द्र प्रसाद, मौलाना मजहरूल हक, आदरणीय ब्रजकिशोर बाबू जैसे महापुरूषों ने जन्म लिया। इस जिले ने देशरत्न डॉ॰ राजेन्द्र प्रसाद जी की धर्मपत्नी स्व॰ राजवंशी जी एवं लोकनायक जयप्रकाश जी धर्मपत्नी स्व॰ प्रभावती जी जैसी त्याग और तपस्या की मूर्तिमान देवियों को भारतीय इतिहास के स्वर्णाक्षरों में दर्ज कराया है। आप इन महापुरूषों एवं ऐतिहासिक नारियों की संतानें हो।

आपके जिले के सपूत और भारत के प्रथम राष्ट्रपति डॉ॰ राजेन्द्र बाबू की जन्मभूमि जीरादेई, राज्यपाल के रूप में अपनी पहली सीवान यात्रा के दौरान ही, मैं उन्हें नमन करने गया था और यह महज संयोग नहीं है कि जब मैं दूसरी बार सीवान आया हूँ तो आज देशरत्न राजेन्द्र बाबू की पावन पुण्यतिथि है। सीवान के लिए आज प्रस्थान करने के पूर्व मैंने पटना के बाँसघाट स्थित राजेन्द्र बाबू के स्मारक–स्थल पर जाकर, उन्हें अपनी श्रद्धांजलि अर्पित की है। राजेन्द्र बाबू की पुण्यतिथि पर उनके जिलावासियों से मुलाकात करना सचमुच मेरे लिए परम सौभाग्य की बात है। राजेन्द्र बाबू का जीवन सादगी, सच्चाई और त्याग का अनुपम उदाहरण था। उनकी प्रतिभा ऐसी थी कि परीक्षक को प्रसन्न होकर उनकी पुस्तिका पर लिखना पड़ा था कि–

"Examinee is better than Examiner" –अर्थात् परिक्षार्थी ही परीक्षक की तुलना में बेहतर है। यह भारतीय शिक्षा जगत् की अनूठी घटना थी। मौजूदा वर्ष राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी के 'चम्पारण सत्याग्रह आन्दोलन' के 'शताब्दी वर्ष' के रूप में आयोजित किया जा

रहा है। दरअसल, बिहार के चम्पारण की ही वह धरती है, जिसने मोहनदास करमचंद गाँधी को 'महात्मा' की संज्ञा से विश्व विख्यात बनाया। राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी के 'चम्पारण किसान आन्दोलन' में जिन नेताओं ने बढ़–चढ़ कर हिस्सा लिया, उनमें सीवान के देशरत्न डॉ॰ राजेन्द्र प्रसाद और ब्रजकिशोर बाबू का महत्वपूर्ण स्थान है। ऐसे प्रतिभाशाली और महान राजनेताओं की धरती के आप निवासी हैं। आपकी मेधा और परिश्रमशीलता से पूरा बिहार सदैव गौरवान्वित रहा है।

आज आपके विद्यालय के भव्य भवन के उद्घाटन के सुअवसर पर मैं आप सबके सुखद, उज्ज्वल और प्रगतिपूर्ण भविष्य की मंगलकामना करता हूँ। आप सभी खूब पढ़ें, लगातार आगे बढ़ें और सफलता की नित नई ऊँचाइयों पर चढ़ें, ईश्वर से मेरी यह प्रार्थना है। मैं समस्त विद्यालय–परिवार और क्षेत्रीय जनता को भी अपनी हार्दिक बधाई देता हूँ। आप सबको बहुत–बहुत धन्यवाद!

जय हिन्द !!

***

प्रस्तुति–जन–सम्पर्क शाखा, राजभवन, पटना।